गुरु नानक - सबद ७३
कीता कहा करे मनि मानु ॥
रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २५

कीता कहा करे मनि मानु ॥
देवणहारे कै हथि दानु ॥
भावै देइ न देई सोइ ॥
कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥१॥
आपे सचु भावै तिसु सचु ॥
अंधा कचा कचु निकचु ॥१॥ रहाउ ॥
जा के रुख बिरख आराउ ॥
जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥
फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥
आपि बीजि आपे ही खाइ ॥२॥
कची कंध कचा विचि राजु ॥
मति अलूणी फिका सादु ॥
नानक आणे आवै रासि ॥
विणु नावै नाही साबासि ॥३॥३२॥

सार: अहंकार तब उत्पन्न होता है जब अहं यह मान लेता है कि सफलता का एकमात्र रचयिता वही है। यह भ्रम मन को अंधा कर देता है और इस सच्चाई को छिपा देता है कि हमारे काम अनेक अदृश्य शक्तियों पर निर्भर करते हैं। कोई भी अकेला नहीं होता, समय, मार्गदर्शन और परिस्थितियाँ, सभी परिणाम को आकार देते हैं। इसे भूलना भ्रम में जीने के समान है। स्पष्टता हमें विनम्र बनाती है, यह दिखाते हुए कि जीवन किसी एक का नहीं, बल्कि एक साझा प्रवाह का परिणाम है। दूरदर्शिता हमें बाहरी रूपों के पार जाकर उस गहन वास्तविकता को देखने की क्षमता देती है जो सब कुछ जोड़ती है। दूरदर्शिता के बिना, मन सतही प्रशंसा और मान्यता से बंधा रहता है। यह सोच की नादानी हमें बेचैन और असंतुष्ट रखती है। उदाहरण के लिए, एक किसान अपनी फसल का घमंड कर सकता है, यह भूलकर कि उस समृद्धि के पीछे सूरज की धूप,

वर्षा और मिट्टी का योगदान है। सच्ची जागरूकता अभिमान को मिटा देती है और विनम्रता में हम संतुलन, स्वतंत्रता और शांति का अनुभव करते हैं।

कीता कहा करे मनि मानु ॥
हम अपने विवेक को अपने कार्यों पर गर्व क्यों करने देते हैं? यह प्रश्न हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि हमारा अभिमान भ्रमक हो सकता है, हमारे अहंकार से प्रेरित होकर यह मान लेना कि हम ही अपनी उपलब्धियों के एकमात्र कर्ता हैं।

देवणहारे कै हथि दानु ॥
केवल सक्षम दाता ही इस बात में उदार होता है कि उसे कितना और क्या देना है, यह एक ऐसा तथ्य है जो इस सत्य को उजागर करता है कि एक सच्चे दाता में वह बुद्धि होती है कि वह प्राप्तकर्ता को वह सब कुछ बिना शर्त दे जिसका वह हकदार है।

भावै देइ न देई सोइ ॥
दाता ही यह निर्धारित करता है कि किसे क्या देना है और क्या नहीं देना। यह बताता है कि उपलब्धि केवल प्रयास या इच्छा पर नहीं बल्कि व्यक्ति की योग्यता पर आधारित होती है।

कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥१॥
यदि कोई स्वयं को कर्ता बताता भी है कि वह कर्ता है तो इससे क्या फर्क पड़ता है? यह प्रश्न आत्म-प्रशंसा के घमंड और खोखलेपन की मिथ्या गर्व को उजागर करता है क्योंकि श्रेय का दावा करने से वास्तविकता नहीं बदलती। (१)

आपे सचु भावै तिसु सचु ॥
जो सत्यवादी हैं वे सत्य पर विश्वास करते हैं।

अंधा कचा कचु निकचु ॥१॥ रहाउ ॥
जिनमें दूरदर्शिता का अभाव होता है वह नादान, सतही और स्पष्टता से रहित होते हैं। (१)(विराम)

जा के रुख बिरख आराउ ॥

जैसे वृक्ष का स्वरूप उसके बीज पर निर्भर करता है वैसे ही मनुष्य का आचरण उसके संकल्प और इरादों से आकार लेता है।

जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥

जिस पदार्थ या स्वभाव का जो रूप होता है उसी के अनुसार उसका नाम और पहचान निर्धारित होती है। यह दर्शाता है कि हमारे आंतरिक गुण और दोष हमारे बाहरी व्यवहार में कैसे प्रतिबिंबित होते हैं।

फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥

फूल की प्रकृति उसके फल को निर्धारित करती है। यह इस बात का प्रतीक है कि हमारी मानसिक अवस्था हमारे कर्मों और उनके परिणामों को निर्धारित करती है।

आपि बीजि आपे ही खाइ ॥२॥

जो बीज हम बोते हैं उसी का फल हमें भोगना पड़ता है। यह दर्शाता है कि हमारे कर्म ही यह निर्धारित करते हैं कि हमें बदले में क्या मिलता है। (२)

कची कंध कचा विचि राजु ॥

एक कमज़ोर दीवार एक कमज़ोर राज्य को ही थाम सकती है। यह याद दिलाता है कि जो विचार और स्वयं भीतर से दुर्बल हों वह ज्ञानोदय धारण नहीं कर सकता।

मति अलूणी फिका सादु ॥

नीरस समझ वाला मन एक बेस्वाद जीवन अनुभव करने जैसा है। यह दर्शाता है कि बिना सार्थक समझ के जीवन के अनुभव का स्वाद फीका रह जाता है।

नानक आणे आवै रासि ॥

नानक कहते हैं कि हम जो कुछ भी प्राप्त करते हैं उसमें आंतरिक मूल्य और सार्थकता होती है। यह याद दिलाता है कि विविध अनुभव हमारे दृष्टिकोण को समृद्ध करते हैं।

विणु नावै नाही साबासि ॥३॥३२॥

आत्म-चिंतन की जागरूकता के बिना हम वह हासिल नहीं कर सकते जो योग्य है। (३)(३२)

तत्त्व: गुरु नानक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि जीवन का हर पहलू अपना गहरा महत्व रखता है चाहे हम उसे स्वीकारें या नहीं। हर अनुभव हमारी समझ को समृद्ध करता है और हमारी बोध-शक्ति का विस्तार करता है। एक कमज़ोर मन ज्ञान का भार उठाने के लिए संघर्ष करता है क्योंकि सच्ची स्पष्टता के लिए भीतरी शक्ति और संतुलन आवश्यक है। बिना आत्मचिंतन के जीवन बेस्वाद भोजन की तरह नीरस हो सकता है। ऐसा सतही जीवन अस्तित्व के गहरे अर्थों को नज़रअंदाज़ कर देता है। आत्म-चिंतन क्षणभंगुर क्षणों को स्थायी अंतर्दृष्टि में बदल देता है। उपलब्धियाँ बाहरी सफलता में नहीं बल्कि आंतरिक जागरूकता में निहित हैं जो हमें शांति और पूर्णता के निकट ले जाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com